एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों में क्या है ?

मुद्रण की त्रुटि या फिर इतिहास की विकृति

❑ तुहिन देब

हाल ही में स्कूल शिक्षा के नए पाठ्यक्रम के तहत नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एन.सी.ई.आर.टी) के द्वारा तैयार पाठ्यपुस्तकों में त्रुटियों का होना, तथ्यों को तोड़मरोड़ कर पेश किया जाना और जानबूझकर एक पक्षीय विचारों को पेश किये जाने का आरोप लगा है। इन आरोपों का जवाब देते हुए मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने संसद में कहा कि ये त्रुटियां असल में मुद्रण की हैं। क्या वाकई ये मुद्रण की त्रुटियां हैं?

एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों में वास्तव में क्या है, यह जानने के लिए आइए नवीं कक्षा की 'समकालीन भारत' (कानटेम्परेरी इंडिया) पाठ्यपुस्तक के पन्नों को थोड़ा पलट कर देखें ।

- पुस्तक के पृष्ठ 4 में कहा गया है - मैडागास्कर अरब सागर का एक द्वीप है। मगर, हम यदि मानचित्र को देखें तो दिखाई पड़ेगा कि मैडागास्कर, हिंद महासागर का एक द्वीप है।
- पृष्ठ 14 में बताया गया है - लंकाशायर, इंग्लैंड का एक शहर है। मगर इंग्लैण्ड में लोग उसे एक काउंटी (प्रदेश) के रूप में ही जानते हैं।
- पृष्ठ 18 में एक व्यक्ति का चित्र छपा है, नीचे उसका नाम लिखा है - बावुदेव बलवंत फड़के । मगर वह चित्र बंगाल के अग्नियुग (ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन) के क्रांतिकारी बारीन घोष का है।

स्वस्थ दृष्टिकोण वाले कोई भी व्यक्ति इस बात को स्वीकार करेंगे कि सामाजिक विज्ञान और इतिहास की किताबों में फासीवाद और नाजीवाद, साम्प्रदायिकता, नस्ल भेद आदि विचारों का विरोध होना चाहिए। इसके अलावा उपयुक्त तथ्यों की सहायता से मानवता विरोध की सोच का पर्दाफाश करना भी जरूरी है। उपरोक्त पुस्तक की इस मामले में क्या भूमिका है ? आइए नीचे देखें -

- 1947 के बाद भारत में बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता के उत्थान का सबसे बड़ा उदाहरण (हिन्दू) सांप्रदायिक नाथूराम गोडसे द्वारा गांधीजी की हत्या की घटना है। मगर इस घटना का उल्लेख तक किताब में नहीं है। जबकि इसी पुस्तक में ओसामा बिन लादेन, तालिबान द्वारा बामियान में बुद्ध की प्रतिमा का विनाश और यहां तक कि 1996 का आम चुनाव जिसके जरिए भाजपानीत गठबंधन सरकार पहली बार दिल्ली में सत्तासीन हई थी, सब का विस्तार से उल्लेख है।
- पुस्तक में कई विषयों पर चर्चा करते हुए बिना किसी प्रसंग के 'हिन्दू' और 'मुसलमान' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। मुस्लिम सांप्रदायिकता और उसके संरक्षक के रूप में मुस्लिम लीग का नाम बार-बार चर्चा में आया है, मगर हिंदू सांप्रदायिकता और उसके संरक्षक के रूप में हिंदू महासभा या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में सामान्य सा उल्लेख भी नहीं किया गया है।
- हिटलर और फासीवाद/नाजीवाद के बारे में भी एक दृष्टिकोण का अनुसरण किया गया है। पृष्ठ-1 में फासीवाद, नाजीवाद के साथ साम्यवाद को एक करके दिखाया गया है। कहा गया है कि साम्यवाद में भी फासीवाद की तरह तानाशाही प्रवृत्ति है। फासीवाद और नाजीवाद के बारे में यह कहा गया है कि यह ''स्टालिन के जरिए थोपी गई ... सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की एक विपरीत प्रतिक्रिया'' थी। प्रजातंत्र के शत्रु के रूप में और द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के पीछे फासीवाद की भूमिका, उग्र नस्लवाद तथा लाखों-लाख यहूदियों के हत्याकांड के बारे में एक वाक्य भी इस पुस्तक में नहीं है। उसी अध्याय में (अध्याय -1 विश्व : कुछ विकास) शांति स्थापना के लिए स्टालिन और हिटलर के बीच हुई अस्थायी संधि पर कटाक्ष किया गया है। यह कहा गया है कि 1939 में स्टालिन की पहल पर रूस-जर्मन शांति संधि, हिटलर के साथ किसी भी यूरोपीय नेता की पहली संधि थी। मगर द्वितीय विश्वयुद्ध के पीछे जिस संधि ने उत्प्रेरक की भूमिका निभाई उसका जिक्र तक नहीं है। वह थी इंग्लैंड व जर्मन के बीच 'म्यूनिख संधि' जो कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री चेंबरलेन के नेतृत्व में 1939 की संधि से एक वर्ष पूर्व 1938 में सम्पन्न हुई थी। पुस्तक में अमरीका, इंग्लैंड तथाा फ्रांस द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व हिटलर के तुष्टिकरण व साम्यवाद के प्रवाह को रोकने के लिए जर्मनी को दिए गए समर्थन का उल्लेख तक नहीं है।

- सारी दुनिया के सभी देशों के छात्र-छात्रायें अपनी पाठ्यपुस्तक में पढ़ते आये हैं कि रूस के शासकों को 'जार' कहा जाता था(जो कि रोमानोव वंश के थो) तथा 1917 में लेनिन के नेतृत्व में रूस में क्रांति हुई थी। मगर इस किताब में कहा गया है कि, रूस में जारवंश का राज था और रूसी क्रांति के बारे में कहा गया है कि वह लेनिन के नेतृत्व में सैनिक विद्रोह या अभ्युथान (कॉप) था। जबकि 'जार' रूस के सम्राट थे और यह बुलगारिया के राजाओं का खिताब था और सैनिक विद्रोह या अभ्युथान महल के अंदर सेनानायकों के नेतृत्व में होता है जबकि रूसी क्रांति को सफल बनाया है मजदूरों के नेतृत्व में व्यापक गरीब किसानों और विद्रोही सैनिकों ने। इसे अभ्युथान (कॉपड़ि इटेट) कहना, इसके महत्व को संकीर्ण करना है। रूसी क्रांति के बारे में एन.सी.ई.आर.टी की किताबों का मूल्यांकन, अमरीकी सोच का ही प्रतिनिधित्व करता है।
- रंगभेद या नस्लवाद के बारे में निंदासूचक एक भी वाक्य पूरी किताब में नहीं है।
- पृष्ठ 2 में कहा गया है कि, ईस्ट इंडिया कंपनी का जन्म भारत में हुआ था। सभी जानते हैं कि कंपनी की स्थापना इंग्लैंड में हुई थी।
- सभी जानते हैं कि गोआ, दादरा नगर हवेली को पुर्तगाली शासन से आजाद किया था भारतीय सेना ने। मगर अध्याय-7 में (प्रजातांत्रिक गणराज्य, विलय और अंतर्राष्ट्रीय संबंध) पृष्ठ -61 पर एक जगह कहा गया है कि दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली चंगुल से भाजपा के ही पूर्व संस्करण जनसंघ के स्वयंसेवकों ने छुड़ाया था। यह कहना असत्य नहीं होगा कि विदेशी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में जनसंघ, हिंदू महासभा या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का तनिक भी योगदान नहीं दिखलाई पड़ता।
- पृष्ठ-10 में हिटलर की नाजी पार्टी को जर्मन राष्ट्रवाद व समाजवाद का मिश्रण कहा गया है। यह इतिहास को और दर्शन को विकृत करने का प्रयास है क्योंकि नाजीवाद, पूंजीवादी/साम्राज्यवादी बर्बर आक्रमण का ही एक रूप है जिसका देशभक्ति या समाजवाद से कोई लेना देना नहीं है।
- पृष्ठ-3 में कहा गया है कि ईसाई धर्म के धर्मगुरू पोप के निर्देश पर पुर्तगाली, स्पेनी और अन्य यूरोपियन ताकतों ने भारत का रुख किया । यह इतिहास का सरलीकरण है क्योंकि किसी धार्मिक निर्देश की मजबूरी के चलते नहीं बल्कि औद्योगिक क्रांति के बाद यूरोप के व्यापारी वर्ग/पूंजीपति वर्गों को मुनाफा कमाने के लिए बाजार के विस्तार की जरूरत पड़ी और यहीं से उपनिवेशवाद का सिलसिला शुरू हुआ। लेकिन किताब में ''पोप के निर्देश''पर अनावश्यक जोर दिया गया है।
- पृष्ठ-3 में कहा गया है कि 1510 में गोवा पर पुर्तगाल के कब्जे के बाद बड़े पैमाने पर हुए धर्मांतरण ने लोगों को नाराज किया। यहां सांप्रदायिक नजरिए का शिकार होकर धर्म परिवर्तन पर अनावश्यक जोर दिया गया है। हकीकत यह है कि पुर्तगाली उपनिवेश में औपनिवेशिक लूट के चलते जनता का जीवन दूभर हो गया था और इसीलिए वहां पुर्तगाली गुलामी के खिलाफ जनता का असंतोष पनपा।
- पृष्ठ-6 में जर्मन इतिहासकार मैक्समुलर के 'आर्य आक्रमणवाद' (आर्य बाहर से आये थे) की आलोचना की गई है। कहा गया है कि यही अंग्रेजों की 'फूट डालों और राज करो' नीति का आधार बना। जबकि इतिहास के वैज्ञानिक विकास और तमाम शोधों से यह पता चलता है कि आर्य मध्य एशिया से भारत आये और वे भारत के निवासी नहीं थे।
- पृष्ठ-11 में बताया गया कि द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका के प्रवेश के साथ ही मित्र शक्तियों की विजय हुई। इतिहास यह बताता है कि वह सोवियत लाल फौजें ही हैं जिन्होंने सारे पूर्वी यूरोप को हिटलर के कब्जे से छुड़ाया और बर्लिन पर निर्णायक जीत दर्ज की।
- पृष्ठ-12 में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन का अपनी अंदरूनी कमजोरी के कारण महाशक्ति का दर्जा खो देना या ढह जाना बताया गया है। जबकि उपनिवेशों में जबरदस्त सामाज्यवाद विरोधी संघर्षों की भूमिका को नजरअंदाज किया गया है जिसके चलते अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा।
- पृष्ठ 15 में अंग्रेजों के खिलाफ जनता में असंतोष के लिए ईसाई मिशनरियों को बढ़ावा देना, विधवा पुर्नविवाह कानून (1856) को लागू करना, धार्मिक निषेध कानून (1851) आदि को जिम्मेदार ठहराया गया है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि पुस्तक के लेखकों को भारतीय जनता में असंतोष के यही कारण मिले। एक गुलाम देश में जहां जनता के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक अधिकारों के नाम पर कुछ नहीं था। जहां रहने के नाम पर सिर्फ गुलामी की बेड़ियां थीं, वहां अंग्रेजों के खिलाफ असंतोष या आजादी की भावना पैदा नहीं होगी तो क्या होगा ?
- पृष्ठ 16 में 1857 की क्रांति की शुरुआत में बहादुर शाह जफर के भारत सम्राट के रूप में घोषित होने के बाद

'गौहत्या' पर प्रतिबंध लगाने की बात अनावश्यक लेकिन सोद्देश्य तरीके से दी गई है। पृष्ठ 19 में पंजाब में गुरू राम सिंह के द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ छोड़े गये कूका आंदोलन के बारे में यह कहा गया है कि यह गौहत्या के भी खिलाफ था। सो 'गौहत्या' का एक उद्देश्य के तहत बार-बार अप्रासंगिक रूप से उल्लेख किया गया है, ऐसा लगता है।

इतिहास और सामाजिक विज्ञान में इस प्रकार के भाजपा समर्थित हस्तक्षेप सिर्फ उपरोक्त पुस्तक में ही सीमित नहीं है। छठवीं कक्षा के लिए 'भारत और विश्व' नामक इतिहास की किताब में भी इस प्रकार के असंख्य 'हीरे-जवाहरात' बिखरे हुए हैं।

- पृष्ठ 61 में मिस्र के कैलेंडर को चंद्र कैलेंडर बताया गया है। असल में वह सौर कैलेंडर होगा।
- पुस्तक में एक जगह कहा गया है: आदि मानव का उद्भव अफ्रीका में कई लाख वर्ष पूर्व हुआ था। फिर दूसरे एक पृष्ठ में कहा गया है कि कई लाख वर्ष (मिलियन) पूर्व इंसान शिकार और कंदमूल फल संग्रह के कार्य में जुटा रहता था।
- अध्याय 11 ''वैदिक सभ्यता'' में कहा गया है कि वैदिक युग में मनुष्य शून्य के प्रयोग को जानता था। वह यह भी जानता था कि पृथ्वी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूम रही है और चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है। फिर कुछ देर बाद कहा गया है कि, मौर्य एवं शुंग युग के बाद उत्तर भारत में शून्य का प्रयोग होना शुरू हुआ था तथा आर्यभट्ट ने सबसे पहले पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण की बात कही थी। इन दो घटनाओं के बीच अन्तर करीब एक हजार वर्ष का है।
- ब्रिटिश राज स्थापित होने से पहले अलग-अलग समय में कई बार भारत के विभिन्न राज्यों में एक राजा या सुल्तान की हत्या करके दूसरे राजा या सुल्तान ने सिंहासन पर कब्जा किया है। मगर इस किताब में कहा गया है कि ईसा पूर्व 187 (बी.सी.) में सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या की घटना, बारहवीं शताब्दि के पहले इस तरह की एक मात्र घटना है। इसके मायने ये हुए कि बारहवीं शताब्दि के बाद, अर्थात् मुस्लिम शासकों के समय काल में ही इस तरह की हत्याओं का चलन भारत में प्रचलित होने लगा। सांप्रदायिक इशारा एकदम स्पष्ट है।
- किताब के दसवें अध्याय में सिंधु घाटी की सभ्यता का विवरण देते हुए योजनाबद्ध रूप से हड़प्पा-मोहनजोदड़ो की सभ्यता को आर्य सभ्यता के साथ करीब-करीब एक करके दिखाया गया है। मगर इतिहास यह कह रहा है कि हड़प्पा सभ्यता का समय 4200-2000 ईसापूर्व है और वेदों का लेखन शुरू ही हुआ है 1100 ईसापूर्व में। इस तरह से द्रविड़ सभ्यता के साथ आर्य सभ्यता के फर्क को मिटा दिया गया है। असल में यहां भारत में आर्य बाहर से आए थे, इस सत्य पर छल-बल तथा कौशल से पर्दा डाल हिंदूत्ववादी विचारधारा की फेरी लगाई गई है।
- अनेक अनुसंधानों से यह प्रमाणित हुआ है कि - वैदिक युग में गौहत्या व्यापक रूप से प्रचलित थी, आर्य गायों का भक्षण करने के आदी थे। गौ माता की स्वयंभू संतान उग्र हिंदूत्ववादियों के लिए अत्यधिक अप्रिय इस सत्य को ढांकने के लिए इस इतिहास की किताब में 'आविष्कृत' और प्रस्तुत तथ्य यह है कि, वैदिक युग में गौमांस भक्षण ही नहीं, बल्कि गौ हत्या या यहां तक कि गाय को घायल करना भी प्रतिबंधित था। अगर कोई इस निषेध को अमान्य करता तो उसे देश निकाला या मृत्युदंड भी दिया जाता था। सत्य से परे मनगढंत जानकारी, हाल ही में हरियाणा में गौहत्या के नाम पर चार दलितों की हत्या करने के अभियुक्त उच्चवर्ग के हत्यारों के पक्ष में ही सिर्फ जनमत तैयार नही कर रही है बल्कि नवीन शिक्षार्थियों की चेतना में भी शुरू से कुशलतापूर्वक सांप्रदायिकता का बीज बोया जा रहा है।
- धर्म के बारे में बताते हुए इस्लाम और सिख धर्म के लिए दो वाक्य से ज्यादा जगह नहीं दी गई है लेकिन हिंदू धर्म की विस्तृत व्याख्या के साथ-साथ 'सुरभि सभी गायों की माता है' यह बताया गया है। पीपल, वट वृक्ष के साथ-साथ तुलसी को भी पवित्र पेड़ बताया गया है। हालांकि यह सारा अकादमिक कार्य कुशलतापूर्वक किया गया है।
- चीनी सभ्यता के अध्याय में कहा गया है कि चीन की दीवार टैराकोटा (जलाई गई मृदा) से बनी है जबकि यह पत्थरों से बनी है।
- आदि मानव (अरली ह्यूमन्स) वाले अध्याय में कहा गया है कि पहिए का अविष्कार कपड़ा बुनने के लिए किया गया था। यह अवैज्ञानिक तथ्य है क्योंकि पहिए का पहला प्रयोग ठेलने वाली गाड़ी में किया गया था।

हालांकि मुरली मनोहर जोशी ने कहा है कि ये सब छपाई की गलती (मुद्रण त्रुटि) हैं। मगर पुस्तकों को ध्यान से पढ़ने पर लगता है कि भारत के शिक्षा और संस्कृति के भगवाकरण के मुख्य प्रवक्ता जोशी और जो भी हों, सत्यवादी नहीं हैं, उनमें सच को स्वीकार करने का साहस नहीं है। न्यूनतम बुद्धि और युक्तिबोध के अधिकारी व्यक्तिगण भी क्या पाठ्यपुस्तकों में वैज्ञानिक तथ्यों से छेड़छाड़ करने तथा मानवता विरोधी मानसिकता की घुसपैठ करवाने के इस सुनियोजित भगवा षडयंत्र को स्वीकार कर लेंगे ?◆